

## प्रीलिमिंस फैक्ट्स: 17 जून, 2020

- [फरसट बेल पहल](#)
- [रज-परव](#)
- [मैलाथयिन](#)
- [ताल-मददले](#)

### फरसट बेल पहल First Bell Initiative

दो सप्ताह के सफल परीक्षण के बाद केरल राज्य सरकार द्वारा स्कूली छात्रों के लिये 'फरसट बेल' नामक ऑनलाइन कार्यक्रम द्वारा नियमित कक्षाएँ प्रारंभ की गई है।

**First Bell**  
TELECAST SCHEDULE OF  
SPECIAL CLASSES  
Monday - Friday daily

Class	Telecast	Repeat telecast
XII	8.30 a.m.-10.30 a.m.	7 p.m.-9 p.m.
I	10.30 a.m.-11. a.m.	
X	11 a.m.-12.30 p.m.	5.30 p.m.-7 p.m.
II	12.30 p.m.-1 p.m.	
III	1 p.m.-1.30 p.m.	
IV	1.30 p.m.-2 p.m.	
V	2 p.m.-2.30 p.m.	
VI	2.30 p.m.-3 p.m.	
VII	3 p.m.-3.30 p.m.	
VIII	3.30 p.m.-4.30 p.m.	
IX	4.30 p.m. - 5.30 p.m.	

- COVID-19 महामारी के चलते शुरू की गई इस ऑनलाइन पहल के अंतर्गत केरल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर टेक्नीकल एजुकेशन (Kerala Infrastructure for Technical Education- KITE) द्वारा नए शैक्षणिक सत्र हेतु कक्षाओं का राज्य सरकार के शैक्षणिक टीवी चैनल वकिटर्स पर प्रसारण किया जा रहा है। ये कक्षाएँ अन्य ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से भी प्रसारित की जाएंगी।
  - KITE राज्य सरकार के अधीन शैक्षणिक संस्थानों के आधुनिकीकरण को प्रोत्साहित और संवर्द्धित करने हेतु स्थापित एक गैर-लाभकारी संगठन (एक सेक्शन-8 कंपनी) है।
- परीक्षण हेतु इन कक्षाओं का प्रसारण 1 जून, 2020 से किया जा रहा था। परीक्षण के दौरान इस कार्यक्रम को छात्रों और अभिभावकों से काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलीं और वकिटर्स वेबसाइट के माध्यम से एक ही दिन में 27 टेराबाइट (TB) डेटा डाउनलोड किया गया था।
- उल्लेखनीय है कि पश्चिम एशिया, अमेरिका और यूरोप में भी सैकड़ों छात्रों द्वारा ये कक्षाएँ देखी गईं और कुछ कक्षाओं को 40 लाख से भी ज्यादा लोगों से देखा।
- सभी कक्षाओं को वास्तविक समय में KITE वकिटर्स के फेसबुक पेज पर और बाद में यूट्यूब चैनल पर देखा जा सकता है।

# Raja Parba

पूर्वी तटीय राज्य ओडिशा में तीन दविसीय रज-पर्व मनाया जा रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जब सूर्य वृषभ राशि से नकिलकर मथुन राशि में प्रवेश करता है तो उस दिन से वर्षा ऋतु का आगमन माना जाता है।



- इसे **मथुन संक्रांति** के रूप में मनाया जाता है और ओडिशा में इसे **रज पर्व** के नाम से मनाया जाता है जो मुख्यतः धरती माँ और व्यापक स्तर पर स्त्रीत्व को समर्पित उत्सव है।
- उड़िया भाषा में रज शब्द का अर्थ है- मासिक धर्म। माना जाता है कि पृथ्वी भगवान जगन्नाथ की पत्नी है और धरती माता इस अवधि के दौरान तीन दिन के मासिक धर्म पर होती हैं।
- इसलिये इस पर्व पर पृथ्वी को नुकसान पहुँचाने वाली कोई भी गतिविधि जैसे- खेत की जुताई, टाइलिंग, निर्माण या कोई अन्य कार्य नहीं किया जाता है।
- पृथ्वी के मासिक धर्म चक्र के तीन दविसीय रज-पर्व के पहले दिन को **पहली रज**, दूसरे दिन को **मथुन संक्रांति** और तीसरे दिन को **बासी-रज** कहा जाता है।
  - **बसुमती स्नान** के साथ इस पर्व का समापन होता है जिसका अर्थ होता है- पृथ्वी माता का स्नान।
  - इस दिन संध्याकाल में लोग धरती माता की प्रतिकृति के रूप में पत्थर के टुकड़ों को स्नान कराकर पूजा करते हैं और एक समृद्ध कृषि वर्ष हेतु प्रार्थना करते हैं।
- रज पर्व में धरती माता के मासिक धर्म को उत्सव की तरह मनाने की यह परंपरा इस तथ्य की स्वीकारोक्ति है कि अतीत में भी महिलाओं के मासिक धर्म को लेकर समाज में कोई वर्जना नहीं थी और मासिक धर्म को प्रजनन क्षमता का प्रतीक मानकर स्त्रीत्व को दूसरे जीवन को जन्म देने की शक्ति माना जाता था।
- यह रज पर्व मानव जीवन में प्रकृति के महत्त्व और प्रकृति के संरक्षण हेतु मानव के कर्तव्य को रेखांकित करता है। यह पारस्परिक संबंध प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिये बहुत आवश्यक है।
- इसके अतिरिक्त यह पर्व स्त्री मुक्ति, मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता और लैंगिक न्याय के सतत् विकास लक्ष्य के अनुरूप है।

## मैलाथियान

### Malathion

सार्वजनिक क्षेत्र की कीटनाशक वनिरिमाता कंपनी एचआईएल (इंडिया) लिमिटेड ने टडिडियों के खतरे को न्यंत्रित करने में सहायता करने के लिये ईरान को लगभग 25 टन मैलाथियान (95% अल्ट्रा-लॉ वॉल्यूम- ULV) की आपूर्ति की है।

- मैलाथियान एक रसायन है जिसका उपयोग मुख्य रूप से खाद्य उत्पादक पौधों को कीड़ों से बचाने के लिये किया जाता है।
- मैलाथियान कृषि, आवासीय भू-निर्माण, सार्वजनिक मनोरंजन क्षेत्रों और सार्वजनिक स्वास्थ्य कीट न्यंत्रण कार्यक्रमों जैसे मच्छर उन्मूलन में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला कीटनाशक है।
- मैलाथियान एक ऑर्गनोफॉस्फेट कीटनाशक है जो मानव स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है क्योंकि ये अपरिवर्तनीय रूप से एक एंजाइम को अवरुद्ध करने का काम करते हैं जो कीड़ों और मनुष्यों दोनों में ही तंत्रिका तंत्र के कार्य के लिये महत्वपूर्ण है। इस प्रकार मानव तंत्रिका तंत्र पर इनका नकारात्मक प्रभाव अधिक देखने को मिलता है।

## टडिडियों के संकट का सामना करने हेतु समन्वित प्रयास

- हॉर्न ऑफ अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका और अरब प्रायद्वीप में व्यापक स्तर पर फसलों को नुकसान पहुँचाने के बाद डेज़र्ट टडिडियों ने मार्च-अप्रैल में भारत में प्रवेश किया और राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब और उत्तर प्रदेश में कृषि फसलों, बागवानी फसलों और अन्य वृक्षारोपण को प्रभावित किया।
- भारत ने टडिडियों के प्रजनन स्थल पर ही इनहे न्यंत्रित करने के लिये पहल शुरू की है और समन्वित प्रयासों के तहत ईरान और पाकिस्तान से संपर्क किया था। ईरान ने इस प्रस्ताव पर अपनी इच्छा व्यक्त की थी।

- इसी के अनुपालन में वदेशि मंत्रालय ने ईरान को 25 टन मैलाथयान 95% ULV के नरिमाण और आपूरतके लयि HIL को आरुडर दयि था ।
  - खादय और कृषि संगठन (FAO) की रपिरुटों के अनुसार, टडिडे के हॉपर चरण की आबादी ईरान के ससितान-बलूचसितान कृषेतर में बढती जा रही है, जो आने वाले महीनों में भारत में फसल के नुकसान का कारण बन सकती है ।
- एचआईएल देश में भी टडिडी नरियंतरण कार्यक्रम के लयि मैलाथयान 95% ULV की आपूरतकर रहा है । वर्ष 2019 से अब तक, कंपनी ने इस कार्यक्रम के लयि 600 टन से अधिक मैलाथयान की आपूरतकी है ।

## ताल-मददले

### Talamaddale

COVID-19 महामारी के दौरान, 'ताल-मददले' जो कथिक्षगान रंगमंच की एक पारंपरकि कला का प्रदर्शन भी वरुचुअल रूप से कयि जाने लगा है ।



- ताल मददले, में कलाकार कसिी भी वेशभूषा में मंच पर एक स्थान पर बैठ कर चुने गए कथानक के आधार पर अपनी वाक् कला का प्रदर्शन करता है ।
- यह यक्षगान का एक पारंपरकि कला रूप तो है लेकिन इसमें नृत्य या वशिष वेशभूषा के बना शब्द बोले जाते हैं । जबकि, यक्षगान में प्रदर्शन के दौरान कलाकार को वशिष वेशभूषा धारण करनी होती है तथा नृत्य अभनिय का प्रदर्शन करना होता है ।
- कला का यह रूप दक्षिण भारत के कर्नाटक तथा केरल के करावली एवं मलनाड कृषेत्रों में प्रचलति है ।

## यक्षगान (Yakshagana)

- कर्नाटक के तटीय कृषेत्र में कयि जाने वाला यह प्रसदिध लोकनाट्य है ।
- यक्षगान का शाब्दकि अरथ है- यक्ष के गीत । कर्नाटक में यक्षगान की परंपरा लगभग 800 वर्ष पुरानी मानी जाती है ।
- इसमें संगीत की अपनी शैली होती है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत 'कर्नाटक' और 'हदुसतानी' शैली दोनों से अलग है ।
- यह संगीत, नृत्य, भाषण और वेशभूषा का एक समृद्ध कलात्मक मशिर्ण है, इस कला में संगीत नाटक के साथ-साथ नैतिक शकिषा और जन मनोरंजन जैसी वशिषताओं को भी महत्त्व दयि जाता है ।
- यक्षगान की कई सामानांतर शैलियीं हैं जनिकी प्रसतुत आंध्र प्रदेश, केरल, तमलिनाडु और महाराष्ट्र में की जाती है ।
- इसकी सबसे लोकप्रयि प्रसतुतयिीं **महाभारत** (अरथात् द्रौपदी स्वयंवर, सुभद्रा वविाह, अभमिन्यु वध, कर्ण-अरजुन पद) और **रामायण** से (अरथात् राजयभषिक, लव-कुश युद्ध, बाली-सुग्रीव पद और पंचवटी) से प्रेरति है ।
- **गोम्बेयेट्टा कठपुतली रंगमंच/नाट्य** (Gombeyatta Puppet Theatre) यक्षगान का सबसे नकिट अनुसरण करता है ।

## भारत में रंगमंच के अन्य महत्वपूर्ण रूप:

- नौटंकी (उत्तर प्रदेश) जो अक्सर अपने वषियों के लयि फारसी साहित्य पर आधारति होता है ।
- तमाशा (महाराष्ट्र)
- भवाई (गुजरात)
- जात्रा (पश्चमि बंगाल)
- कूडयिाट्टम, केरल के सबसे पुराने पारंपरकि रंगमंच रूपों में से एक है, जो संस्कृत रंगमंच परंपराओं पर आधारति है
- मुदयिट्टु, केरल का पारंपरकि लोक रंगमंच
- भाओना, (असम)

- माच (मध्य प्रदेश)
- भांड पाथेर, कश्मीर का पारंपरिक संगमंच

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prelims-facts-17-june-2020>

